डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष,डॉ. रामविलास शर्मा के साहित्य संबंधी विचार

डॉ. रामविलास शर्मा ऐसे आलोचक हुए जिन्होंने परंपरा और आधुनिकता में सामंजस्य स्थापित करते हुए नवीन आलोचना – दृष्टि का विकास किया। उनका मानना था कि परंपरा और आधुनिकता मनुष्य के दोनों पैरों के समान एक साथ चलते हैं। जिस प्रकार चलते समय जो कदम आगे रहता है, वही फिर पीछे रहता है और इस प्रकार ही चलना संभव हो पाता है। यदि दोनों पैर बारी – बारी से एक बार पीछे रहकर दूसरे को आगे न बढ़ने दे तो चलना संभव नहीं हो सकता है। परंपरा और आधुनिकता भी आपस में इसी प्रकार से जुड़े हुए हैं और निरंतर मानव – जीवन के विकास में सहयोग करते रहे हैं। भारतीय साहित्य की अत्यंत गौरवशाली परंपरा रही है, उसकी उपेक्षा करके सिर्फ आधुनिकता के बल पर न तो साहित्य का समग्र मूल्यांकन संभव है और न ही मानव समाज का समुचित विकास ही संभव है। उनकी आलोचनादृष्टि में मार्क्सवाद का विशेष स्थान है। आलोचना में मार्क्सवाद के प्रगतिशील तत्वों का उपयोग उन्होंने आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचनादृष्टि के समर्थन और ग्रहण के साथ किया। क्लासिकल भारतीय साहित्य की उदात्त भावभूमि को तो उन्होंने स्वीकार किया ही, भारतीय लोकपरंपरा और लोकचित्तवृति की भी उपेक्षा नहीं की। निराला उनके प्रिय कवि हैं। निराला पर लिखी उनकी आलोचनात्मक पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' (1969) हिंदी समेत समस्त भारतीय समीक्षा के इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। डॉ. रामविलास शर्मा की दृष्टि में भारतीय साहित्य की उदात्त और गौरवशाली परंपरा रही है, उस परंपरा को समग्रता में ग्रहण करने की आवश्यकता है। 'परंपरा का मूल्यांकन' 'आस्था और सौन्दर्य' आदि ग्रंथों में इनकी दृष्टि – व्यापकता देखी जा सकती है।

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय – सांस्कृतिक नवजागरण की आंतरिक शक्तियों का इन्हें गहरा ज्ञान है। उनकी इस गहन – गंभीर समझ की संपुष्टि निम्नलिखित ग्रंथों के आधार पर होती है –

'भारतेंदु – युग और हिंदी – भाषा की विकास – परंपरा', 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी – नवजागरण', 'लोकजागरण और हिंदी साहित्य', (भूमिका, भाग 1985), 'मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य', 'नयी कविता और अस्तित्ववाद'

डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार हिंदी – आलोचना में डॉ. शर्मा ने चक्रवर्तित्व स्थापित करते हुए नयी दिशा एवं दृष्टि से हिंदी आलोचना को प्रगतिशील परंपराओं की आंतरिक समझ की ओर प्रवृत किया है। विरोधियों द्वारा कई कोणों से कोसे जाने पर भी आज हिंदी में उन जैसा प्रतिभावान आलोचक दूसरा नहीं है। शुभ शकुन यह है कि नये युवा आलोचक आचार्य शुक्ल और डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचना – परंपरा को ही विशिष्ट ढंग से विकसित कर रहे हैं।

आलोचना और निबंध लेखन में उनकी पैनी दृष्टि के अनेक उदाहरण प्राप्त हुए हैं। विचारों के स्तर पर वे कहीं भी समझौता नहीं करते हैं। अत्यंत निर्भीकता पूर्वक अपनी बात रखते हैं। 'मार्क्सवाद और प्राचीन साहित्य का

मूल्यांकन' उनका बहुत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी – आलोचना' ग्रंथ को उनकी आलोचना पद्धति का केंद्र – बिंदु माना जाता है। डॉ. रामविलास शर्मा का पहला आलोचनात्मक लेख 'निराला जी की कविता' 1934 में प्रकाशित हुआ, उनकी पहली आलोचना – पुस्तक 'प्रेमचंद' 1941 में प्रकाशित हुआ। कवियों में निराला, कथाकारों में प्रेमचंद और आलोचकों में शुक्ल जी उन्हें प्रिय थे। उन्होंने गहन अध्ययन करने के पश्चात ही आलोचनाएँ लिखीं। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं –

'भारत के प्राचीन भाषापरिवार और हिंदी' (तीन खंड, क्रमशः 1979, 1980, 1981) 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद' (दो खंड 1982), 'परंपरा का मूल्यांकन' (1981), 'कथा विवेचन और गद्यशिल्प' (1982), 'मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य' (1986),'हिंदी जाति का साहित्य' (1986), 'मार्क्स और पिछड़े हुए समाज' (1986), 'प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल' (1986), 'स्वाधीनता – संग्राम : बदलते परिप्रेक्ष्य' (1992), 'भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भौतिकवाद' (1992), 'इतिहास – दर्शन' (1992), 'पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद' (1994), 'भारतीय नवजागरण और यूरोप' (1996), 'भारतीय संस्कृति और हिंदी – प्रदेश' (दो खंड; 1999) आदि।

उन्होंने आलोचना में खंडन और मंडन दोनों रूपों को अपनाया है। खंडन करते हुए वे शास्त्रार्थ करते हैं, तर्क प्रस्तुत करते हैं, कहीं – कहीं व्यंग्य और विनोद का सहारा भी लेते हैं। मंडन शैली में उन्होंने अनेक साहित्यकारों के महत्व को स्थापित किया। आधुनिक युग में भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद और निराला के साहित्यिक व्यक्तित्व को साहित्य – अनुरागियों के समक्ष प्रस्तुत किया है और इस प्रकार स्वयं भी हिंदी के बड़े आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

डॉ. रामविलास शर्मा किसी के अन्धानुयायी नहीं थे। उनमें अपने निष्कर्षों के प्रति दृढ़ता थी। डॉ. रामविलास शर्मा ने आधुनिकता की परिधि को भी विस्तार प्रदान किया।